



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उपखण्ड (i)

PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 163]

नई दिल्ली, सोमवार, मई 16, 1977/बैशाख 26, 1899

No. 163]

NEW DELHI, MONDAY, MAY 16, 1977/VAISAKHA 26, 1899

इस भाग में विभिन्न पाँच संलग्न धर्म जारी हैं जिससे इक पह अलग संक्षेप के रूप में रखा जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed
as a separate compilation

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

NOTIFICATION

New Delhi, the 16th May 1977

G.S.R. 241 (E).—The following Proclamation by the President is published for general information—

Whereas, I, Basappa Danappa Jatti, Vice-President acting as President of India, have received a report from the Governor of the State of Manipur and after considering the report and other information received by me, I am satisfied that a situation has arisen in which the Government of that State cannot be carried on in accordance with the provisions of the Constitution of India (hereinafter referred to as "the Constitution"),

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by article 356 of the Constitution and of all other powers enabling me in that behalf, I hereby proclaim that I—

(a) assume to myself as President of India all functions of the Government of the said State and all powers vested in or exercisable by the Governor of that State

(b) declare that the powers of the Legislature of the said State shall be exercisable by or under the authority of Parliament; and

(c) make the following incidental and consequential provisions which appear to me to be necessary or desirable for giving effect to the objects of this Proclamation, namely—

(i) In the exercise of the functions and powers assumed to myself by virtue of clause (a) of this Proclamation as aforesaid, it shall be lawful for me as President of India to act to such extent as I think fit through the Governor of the said State,

(ii) the operation of the following provisions of the Constitution in relation to that State is hereby suspended, namely—

so much of the proviso to article 3 as relates to the reference by the President to the Legislature of the State;

so much of clause (2) of article 151 as relates to the laying before the Legislature of the State of the Reports submitted to the Governor by the Comptroller and Auditor-General of India,

articles 163 and 164,

so much of clause (3) of article 166 as relates to the allocation among the Ministers of the business of the Government of the State, articles 167 and 169,

clause (1) of article 174; articles 175, 176 and 177,

clause (e) of article 179 and the first proviso thereto;

articles 181, 188, 189, 193, 194, 196 and 198,

clauses (3) and (4) of article 199, articles 208 to 211 (both inclusive),

the proviso to clause (1) and the proviso to clause (3) of article 213, and

so much of clause (2) of article 323 as relates to the laying of the report with a memorandum before the Legislature of the State,

(iii) any reference in the Constitution to the Governor shall in relation to the said State be construed as a reference to the President and any reference therein to the Legislature of the State or the Houses thereof shall, in so far as it relates to the functions and powers thereof, be construed, unless the context otherwise requires, as a reference to Parliament, and, in particular, references in article 213 to the Governor and to the Legislature of the State or the Houses thereof, shall be construed as references to the President and to Parliament or the Houses thereof respectively.

Provided that nothing herein shall affect the provisions of article 153, articles 155 to 159 (both inclusive), article 299 and article 361 and paragraphs 1 to 4 (both inclusive) of the Second Schedule or prevent the President from acting under sub-clause (1) of this clause to such extent as he thinks fit through the Governor of the said State,

(iv) any reference in the Constitution to Acts or laws of or made by the Legislature of the State shall be construed as including a reference to Acts or laws made, in exercise of the powers of the Legislature of the State, by Parliament by virtue of this Proclamation, or by the President or other authority referred to in sub-clause (a) of clause (1) of article 357 of the Constitution and so much of the General Clauses Act, 1897 (10 of 1897) as applies to State laws, shall have effect in relation to any such Act or law, as if it were an Act of the Legislature of the State.

New Delhi.

The 16th May, 1977

B. D. JATTI,
Vice-President acting as President

[No. V/11013/7/77-S&P(DV)]

New Delhi;
The 16th May, 1977.

M L KAMPANI, Jt Secy.

ORDER

New Delhi, the 16th May 1977

G.S.R. 242 (E).—The following Order by the President is published for general information—

In pursuance of sub-clause (1) of clause (c) of the Proclamation issued on this the 16th day of May, 1977, by me under article 356 of the Constitution of India, I hereby direct that all the functions of the Government of the State of Manipur and all the powers vested in or exercisable by the Governor of that State under the Constitution or under any law in force in that State, which have been assumed by the President by virtue of clause (a) of the said Proclamation, shall, subject to the superintendence, direction and control of the President, be exercisable also by the Governor of the said State.

B D JATTI,
Vice-President acting as President

New Delhi,
The 16th May, 1977

[No V/11013/7/77-S&P (DV)]

M L KAMPANI, Lt Secy.

New Delhi,
The 16th May, 1977

गृह मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 16 मई, 1977

सा० का० नि० 241(भ).—राष्ट्रपति द्वारा जारी की गई निम्नलिखित उद्घोषणा सर्वसाधारण के सूचनार्थ प्रकाशित की जा रही है—

यत्. मुझे, भारत के राष्ट्रपति के रूप में कार्य करते हुए उपराष्ट्रपति बसप्पा बानप्पा जत्ती को मणिपुर राज्य के राज्यपाल से एक रिपोर्ट प्राप्त हुई है, और इस रिपोर्ट तथा मुझे प्राप्त अन्य सूचना पर विचार करने के बाद मेरा समाधान हो गया है कि ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई है, जिसमें राज्य का शासन भारत के संविधान (जिसे इसके पश्चात् “संविधान” कहा गया है) के उपबन्धों के अनुसार नहीं चलाया जा सकता है;

अतः प्रब्र मैं, संविधान के अनुच्छेद 356 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का तथा उस निमित्त मुझे समर्थ बनाने वाली अन्य सभी शक्तियों का प्रयोग करते हुए एतद्वारा उद्घोषणा करता हूं कि मैं—

- (क) उक्त राज्य की सरकार के सभी कृत्य और इस राज्य के राज्यपाल में निहित, तथा उनके द्वारा प्रयोक्तव्य सभी शक्तियाँ, भारत के राष्ट्रपति के रूप में स्वयं सम्भालता हूं;
- (ख) घोषित करता हूं कि उक्त राज्य के विधान मंडल को शक्तिया संसद द्वारा या उसके प्राधिकार के अधीन प्रयोक्तव्य होगी; और

(ग) निम्नलिखित आनुपयोगिक और पारिषामिक उपबंध करता है जो इस उद्घोषणा के उद्देश्यों को प्रभावी बनाने के लिए मुझे आवश्यक या वाल्नीय प्रतीत होते हैं; अर्थात् —

(i) उस उद्घोषणा के उपर्युक्त खंड (क) के आधार पर मेरे द्वारा संभाले गए कल्यों और शक्तियों का प्रयोग करने में, मेरे लिए भारत के राष्ट्रपति के रूप में उस सीमा तक जिस तक मैं ठीक समझ उक्त राज्य के राज्यपाल के माध्यम से कार्य करना विधिपूर्ण होगा;

(ii) उक्त राज्य के सबध में संविधान के निम्नलिखित उपबंधों के प्रत्येक को एतद्वारा नियमित किया जाता है, अर्थात् —

अनुच्छेद 3 के परन्तुक का उतना भाग जितने का सबध राष्ट्रपति द्वारा राज्य के विधान मण्डल को नियंत्रण करने से है,

अनुच्छेद 151 के खंड (2) का उतना भाग जितने का संबंध भारत का नियन्त्रक और महालेखा परीक्षक द्वारा राज्यपाल के समक्ष प्रस्तुत किए गए प्रतिवेदनों को राज्य के विधान मण्डल के समक्ष रखे जाने से है;

अनुच्छेद 163 और 164;

अनुच्छेद 166 के खण्ड (3) का उतना भाग जितने का सम्बन्ध राज्य सरकार वे कार्य के मत्रियों के बीच बटवारे से है;

अनुच्छेद 167 और 169;

अनुच्छेद 174 का खण्ड (1) अनुच्छेद 175, 176, और 177;

अनुच्छेद 179 का खण्ड (ग) और उस अनुच्छेद का प्रथम परन्तुक;

अनुच्छेद 181, 188, 189, 193, 194, 196 और 198;

अनुच्छेद 199 का खण्ड (3) और खण्ड (4);

अनुच्छेद 208 से 211 (जिसमें ये दोनों सम्मिलित हैं);

अनुच्छेद 213 वे: खण्ड (1) का परन्तुक और खण्ड (3) का परन्तुक; और

अनुच्छेद 323 के खण्ड (2) का उतना भाग जितने का सम्बन्ध ज्ञापन सहित रिपोर्ट की राज्य के विधान मण्डल के समक्ष रखे जाने से है;

(iii) संविधान में राज्यपाल के प्रति किसी नियंत्रण का अर्थ उस राज्य के सम्बन्ध में राष्ट्रपति के प्रति नियंत्रण लगाया जाएगा और उसमें राज्य के विधान मण्डल या विधान सभा के प्रति किसी नियंत्रण का, जहाँ तक उसका सम्बन्ध उसके कल्यों और उसकी शक्तियों से है, अर्थात्, जब तक कि संवर्भ द्वारा अन्यथा अपेक्षित न हो, संसद के प्रति नियंत्रण लगाया जाएगा और विशिष्टतया अनुच्छेद 213 में राज्यपाल और राज्य के विधान मण्डल या उसके सदनों के प्रति नियंत्रण का अर्थ, क्रमशः राष्ट्रपति और संसद या उसके सदनों के प्रति नियंत्रण लगाया जाएगा;

परन्तु इसमें की कोई बात अनुच्छेद 153, अनुच्छेद 155 से लेकर अनुच्छेद 159 तक (जिसमें ये दोनों सम्मिलित हैं), अनुच्छेद 299 और अनुच्छेद 361 तथा द्वितीय अनुसूची के पैरा 1 से लेकर पैरा 4 तक (जिसमें ये दोनों सम्मिलित हैं) के उपबन्धों पर प्रभाव नहीं ढालेगी और न राष्ट्रपति को उस खण्ड (i) के उपखण्ड (1) के उपद्वारा राज्यपाल के माध्यम से कार्य करने से निवारित करेगी ;

(iv) संविधान में राज्य के विधान मण्डल के या एतद्वारा बनाए गए अधिनियमों या विधियों के प्रति किसी निर्देश का ऐसे अर्थ लगाया जाएगा मानो उसके अन्तर्गत इस उद्घोषणा के आधार पर संसद् द्वारा या राष्ट्रपति या संविधान के अनुच्छेद 357 के खण्ड (1) के उपखण्ड (क) में निर्दिष्ट अन्य प्राधिकारी द्वारा राज्य के विधान मण्डल की शक्तियों का प्रयोग करते हुए बनाए गए अधिनियमों या विधियों के प्रति निर्देश है, और माध्यारण खण्ड अधिनियम 1897 (1897 का 10) का उतना भाग जितना राज्य विधियों पर लाग है, ऐसे किसी अधिनियम या विधि के बारे में ऐसे प्रभावी होगा मानो यह उस राज्य के विधान मण्डल का अधिनियम हो ।

नई दिल्ली ;

16 मई, 1977

बसपा दानपा जल्ती,

राष्ट्रपति के हृप में कार्य करते हुए उप-राष्ट्रपति ।

[स० V/11013/7/77-एस एण्ड पी (डी-V)]

नई दिल्ली ;

16 मई, 1977

मनोहर लाल कम्पानी, मध्यकृत चिचित ।

ग्रावेश

नई दिल्ली, 16 मई, 1977

सा० का० नि० 242(अ).—राष्ट्रपति द्वारा जारी किया गया निम्नलिखित ग्रावेश सर्वसाधारण के सूचनार्थ प्रकाशित किया जा रहा है.—

भारत के संविधान के अनुच्छेद 356 के अधीन मेरे द्वारा आज मई, 1977 के सोलवें दिन जारी की गई उद्घोषणा के खण्ड (ग) के उपखण्ड (i) का अनुसरण करते हुए मैं एतद्वारा निर्देश देता हूँ कि मणिपुर राज्य सरकार के सभी कृत्य और संविधान के अधीन या उस राज्य में प्रवृत्त किसी विधि के अधीन उस राज्य के राज्यपाल में निहित या उसके द्वारा प्रयोक्तव्य सभी शक्तियों, जिनको राष्ट्रपति ने

उक्त उद्देश्यणा के खण्ड (क) के ग्राधार पर स्वयं सम्भाल लिया है, राष्ट्रपति के अधीक्षण, निदेशन और नियंत्रण के अध्याधीन रहते हुए, उक्त राज्य के राज्यपाल द्वारा भी प्रयोक्तव्य होगा।

नई विस्ती ;

16 मार्च, 1977

बसपा बानपा जस्ती,

राष्ट्रपति के रूप में कार्य करते हुए उप-राष्ट्रपति ।

[सं० V/11013/7/77-एस एंड पी (डी-V)]

नई विस्ती ;

16 मार्च, 1977

मनोहर लाल कमानी, संयुक्त सचिव ।

मंडा प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, मिन्टो रोड, नई विस्ती द्वारा
भीप्रत तथा नियंत्रक, प्रकाशन विभाग, दिल्ली द्वारा प्रकाशित 1977